अध्याय-7 | साखियाँ एवं सबद | कबीर

Worksheet-1

Under CSR Support by ipca | Foundation
missiongyan

JINENDER SONI
Founder, MISSION GYAN

बहुविकल्पी प्रश्न

1. साखियाँ एवं सबद के संदर्भ में हम ईश्वर को क्यों नहीं ढूँढ़ पाते हैं?

(अ) क्योंकि हम अपने को बहुत ज्ञानी समझते हैं
(ब) क्योंकि हम तीर्थ यात्रा नहीं करते
(स) क्योंकि हम मूर्ति पूजा नहीं करते
(द) क्योंकि हम अपने अंत:करण को नहीं टटोलते

2. प्रेमी मिलने का अर्थ है —

(अ) ईश्वर का सामीप्य
(ब) आत्मा का परमात्मा से मिलन
(स) अपने प्रिय से मुलाक़ात
(द) सांसारिक मोह-माया

3. प्रेमी ढूंढत में फिरो, प्रेमी मिले न कोइ। प्रेमी को प्रेमी मिले, सब विष अमृत होइ।।
'सब विष अमृत होइ' से कबीर का क्या तात्पर्य है?

(अ) विकारों का शांत होना
(ब) दुख का सुख में परिवर्तन होना
(स) विष का अमृत में बदलना
(द) दूर गए परिजनों का समीप आना

4. कबीर दास जी —

(अ) सगुण और निर्गुण दोनों के उपासक थे
(ब) निर्गुण के उपासक थे
(स) सगुण के उपासक थे
(द) नास्तिक थे

5. कबीर दास जी ने ज्ञानी और संत किसे बताया?

(अ) जो अपने धर्म सम्प्रदाय का ख्याल रखता है
(ब) जो कठोर साधना में लीन रहता है
(स) जो सदा ईश्वर भक्ति में लीन रहता है
(द) जो सरल हृदय से निष्पक्ष होकर सम्प्रदायों से ऊपर उठकर प्रभु का ध्यान करता है

6. आंधी पीछे जो जल बूढ़ा, प्रेम हरि जन भीनां। कहै कबीर भांन के प्रगटे, उदति भया तुम खीनां ।।
इन पंक्तियों में कवि कबीर 'भांन' द्वारा किस की ओर संकेत करते हैं ?

(अ) सूर्य
(ब) भक्ति
(स) चंद्रमा
(द) प्रेम

7. मोको कहां ढूंढे बंदे, मैं तो तेरे पास में। ना मैं देवल ना मैं मसजिद, ना काबे कैलास में ।।
कबीर द्वारा रचित उपयुक्त पंक्ति में 'मैं' कौन है?

(अ) मानव
(ब) संसार
(स) कवि
(द) निर्गुण ब्रह्म

8. पखापखी के कारनै, सब जग रहा भुलान। निरपख होई के जयि भजै, होई संत सुजान।।
यहां कौन-सा छंद प्रयोग किया है ?

(अ) सोरठा
(ब) रोला
(स) चौपाई
(द) दोहा

मिशन ज्ञान
पढ़ना जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसा चाहें!
100% FREE!
Video COURSES | QUIZ | PDF | TEST SERIES
Download Mission Gyan App

9. कबीर के अनुसार किसके नष्ट होते ही राम और रहीम में अंतर नही रह जाता है?

(अ) जातिगत भेदभाव के (ब) मोह-माया के

(स) धार्मिक कट्टरता के (द) पारिवारिक कलह के

10. जोग जुगति करि संतों बांधी, निरचू चुवै न पांणी। कूड़ कपट काया का निकस्या, हरि की गति जब जांणी ।।
कवि ने मुख्य रूप से किस अलंकार का प्रयोग किया है?

(अ) अनुप्रास (ब) रूपक

(स) पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार (द) उपमा

रिक्त स्थान :

11. कबीर ने संसार को _____ है।

12. कबीर _____ का आनंद लेना चाहते हैं।

सत्य / असत्य

13. जो ज्ञानी हो वह सच्चा संत होता है।

14. कबीर दास की एकमात्र रचना का नाम कबीर ग्रंथावली है।

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

15. मानसरोवर से कबीर का क्या आशय है?

16. कबीर के अनुसार हंस किसका प्रतीकार्थ है? वह अन्यत्र क्यों नहीं जाना चाहता है?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

17. कबीर ने ईश्वर को सब स्वाँसों की स्वाँस में क्यों कहा है?

18. कबीर ने सच्चे प्रेमी की क्या कसौटी बताई है?

निबंधात्मक प्रश्न

19. कबीर ने संसार को स्वान रूप क्यों कहा है? कबीर के अनुसार इस संसार में सच्चा संत कौन कहलाता है?

20. काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिए-

हस्ती चढ़िए ज्ञान कौ, सहज दुलीचा डारि।
स्वान रूप संसार है, भँकन दे झख मारि।

HOTS

21. साखियाँ के तीसरे दोहे में कबीर ने किस प्रकार के ज्ञान को महत्त्व दिया है?

मिशन ज्ञान
पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!
100% FREE!
Video COURSES | QUIZ | PDF | TEST SERIES
Download Mission Gyan App

Under CSR Support by
ipca | Foundation
missiongyan
JINENDER SONI
Founder, MISSION GYAN

1. (द) साखियाँ एवं सबद के संदर्भ में हम ईश्वर को नहीं ढूंढ पाते हैं क्योंकि हम अपने अंतःकरण को नहीं टटोलते हैं।
2. (ब) आत्मा का परमात्मा से मिलन।
3. (अ) 'सब विष अमृत होइ' से कबीर का तात्पर्य विकारों का शांत होना से है। ईश्वर प्राप्ति के पश्चात सारी बुराइयां नष्ट हो जाती हैं और सच्चाइयों का संचार होता है।
4. (ब) कबीरदास जी निर्गुण के उपासक थे। उनके अनुसार ईश्वर निराकार है और हर जगह व्याप्त है।
5. (द) कबीर दास जी ने ज्ञानी और संत उसे बताया है, जो सरल हृदय से निष्पक्ष होकर सम्प्रदायों से ऊपर उठकर प्रभु का ध्यान करता है।
6. (अ) भान ज्ञान रूपी सूर्य का प्रतीक है जिसके उदित होते ही तम रूपी अज्ञान दूर हो जाता है।
7. (द) मनुष्य ईश्वर को प्राप्त करने के लिए इधर-उधर भटकता है, किन्तु वह तो उसमें ही बसा है। कबीर निर्गुण ब्रह्म की उपासना करते थे इसलिए उसने यह कहा है।
8. (द) दोहा। चौपाई अर्धसममात्रिक छंद होता है, जिसमें पहले और तीसरे चरण में 13-13 तथा दूसरे और चौथे चरण में 11-11 मात्राएं होती है।
9. (स) कबीर के अनुसार धार्मिक कट्टरता के नष्ट होते ही राम और रहीम में अंतर नही रहता और वे दोनों एक ही ईश्वर के रूप नजर आने लगते हैं।
10. (अ) जोग जुगति में 'ज' वर्ण की तथा कूड़ कपट काया का में 'क' वर्ण की आवृत्ति के कारण अनुप्रास अलंकार है।
11. **रिक्त स्थान :** स्वान
12. **रिक्त स्थान :** मुक्ति का
13. **सत्य / असत्य :** असत्य
14. **सत्य / असत्य :** सत्य
15. मानसरोवर से कवि का आशय मन रूपी सरोवर से है। इसमें स्वच्छ विचार रूपी जल भरा हुआ है। इस स्वच्छ जल में जीवात्मा रूपी हंस प्रभु भक्ति में लीन होकर स्वच्छंद होकर मुक्तिरूपी मुक्ताफल चुग रहे हैं। ऐसे आनंददायक स्थान को छोड़कर वे अन्यत्र जाना नही चाहते।
16. हंस जीवात्मा का प्रतीक है। वह स्वच्छ विचाररूपी जल में मन रुपी सरोवर में आनंद रुपी मोती चुगता हुआ विचरण कर रहा है। इस आनंदायक स्थान को छोड़कर वह अन्ताय जाना नहीं चाहता |
17. कवि ने ईश्वर को 'सब स्वाँसों की स्वाँस में इसलिए कहा है क्योंकि सभी प्राणियों की रचना ईश्वर ने की है। प्रत्येक मनुष्य के अंदर स्थित आत्मा ईश्वर का ही अंश है। जीव का अस्तित्व उसी आत्मा के कारण संभव है।
18. कवि ने सच्चे प्रेमी की यह कसौटी बताई है कि सच्चा प्रेमी वही है जो ईश्वर की भक्ति करते हुए उसे पाने का प्रयास करता है। ईश्वर के अलावा वह किसी सांसारिक वस्तु को नही पाना चाहता। वह लोभ, मोह, माया से ऊपर उठ चुका होता है। सांसारिक आकर्षण तथा बंधन उसके लिए ईश्वर प्राप्ति में बाधक नहीं बन पाते हैं।
19. जिस प्रकार हाथी को अपनी राह पर चलते हुए देखकर कुत्ते भौंकना शुरू कर देते हैं और हाथी बेपरवाह होकर अपने रास्ते पर निरंतर चलता रहता है, उसी प्रकार भक्ति और ज्ञान प्राप्ति में लगे हुए साधकों को देखकर संसार उसकी निंदा करने लगता है। ऐसे लोगों को संसार की परवाह न करते हुए अपने लक्ष्य प्राप्ति में लगे रहना चाहिए। संसार की इसी प्रवृत्ति को देखकर कबीर ने संसार को स्वान रूप कहा है।

इस संसार में सच्चा संत वही कहलाता है जो —

i. सांसारिक मोहमाया और लोभ लालच से दूर रहकर प्रभु की सच्ची भक्ति करता है।

ii. सुख-दुख, लाभ-हानि, ऊँच-नीच, अच्छा-बुरा आदि को समान रूप से अपनाता है।

मिशन ज्ञान
पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!
100% FREE!
Video COURSES | QUIZ | PDF | TEST SERIES
Download Mission Gyan App

iii. दिखावे की भक्ति नहीं करते हुए सच्ची भक्ति से प्रभु को प्राप्त करना चाहता है।

iv. मनुष्य-मनुष्य में भेदभाव नही करता।

20. काव्य सौंदर्य — भाव सौंदर्य- ज्ञान का महत्त्व प्रतिपादित करते हुए कवि कहते हैं कि ज्ञान रूपी हाथी की सवारी मनुष्य को सहज गलीचा डालकर करनी चाहिए। ऐसा करते समय कुत्ता रूपी संसार उसकी आलोचना करता है तो मनुष्य को उसकी परवाह नहीं करनी चाहिए। अर्थात मनुष्य को ज्ञान प्राप्ति में लगे रहना चाहिए। ऐसा करते हुए उसे आलोचना की परवाह नहीं करनी चाहिए।

शिल्प सौंदर्य-

i. सधुक्कड़ी भाषा का प्रयोग है। इसमें 'हस्ती', 'स्वान', 'ज्ञान' आदि तत्सम शब्दों का प्रयोग है।

ii. तुकांत युक्त इस रचना में स्वर मैत्री अलंकार है।

iii. रचना में भक्ति रस की प्रधानता है।

21. तीसरे दोहे में कवि ने सांप्रदायिकता एवं भेदभाव रहित सच्चे ज्ञान की प्राप्ति को महत्त्व दिया है। सांसारिकता में फँसकर मनुष्य सच्चे ज्ञान से अनभिज्ञ रहता है। उसे खोजने और पाने के स्थान पर वह अपना समय व्यर्थ की वस्तुओं को खोजने में नष्ट कर देता है।

मिशन ज्ञान
पढ़ें : जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!
100% FREE!
Video COURSES | QUIZ | PDF | TEST SERIES
Download Mission Gyan App